प्रथमः पाठः

प्रार्थना

प्रभो देश रक्षाय बलम् मे प्रयच्छ ।

नमस्तेऽस्तु देवेश बुद्धिम् च यच्छ ।।

सुता ते वयं शूर वीराः भवाम्।

गुरून् मातरं चापि तातं नमामः।।1।।

शब्दार्थः– मे :– मुझे ,प्रयच्छ :– देना ; अस्तु :– हो देवेश :– देवों के ईश्वर यच्छ :– दें चापि :–और तातम्:– पिता को ; नमामि :–प्रणाम् करें

प्रसंग :– प्रस्तुत पद्यांश संस्कृत भारती में से लिया गया है।यह प्रथमः पाठ प्रार्थना में से लिया गया है।इसमें भगवान से बल एवं बुद्धि के लिए प्रार्थना की गई है।

सरलार्थ :– हे भगवान! देश की रक्षा का बल मुझे प्रदान करें। हे भगवान! आपको नमस्कार है मुझे बुद्धि प्रदान करें ,हम तेरे पुत्र शूर वीर होवें।

घृणाया तु नाशः सदैक्यस्य वासः।

भवेद भारते स्नेह वृतेः विकासः।।

प्रजातांत्रिकं राज्यं अस्माकमत्र।

सदा वर्धतां मंगलायात्र तत्र।।2।।

शब्दार्थः– घृणाया :– नफरत ; सदैकस्य :– सदा एकता का , भवेद :– हो ,वृते :– प्यार का,प्रजातांत्रिकम :– प्रजा तंत्र अस्माकमः– हमारा ,अत्र :– यहॉ ,वर्धतां :– बढे,मंगल :– कुशलता , अत्र :– यहॉ , तत्र :– वहॉ ।

प्रसंग :– प्रस्तुत पंद्याश संस्कृत भारती में से लिया गया है। यह प्रार्थना पाठ में से लिया गया है। इस में कवि ने भारत की एकता को कायम रखते हुए मंगल की कामना की है।

सरलार्थः– भारत में घृणा का नाश हो और सदा एकता का वास हाने से स्नेह का विकास हो ।प्रजा तंत्रात्मक हमारे राष्ट में यहॉ वहॉ सब जगह मंगल हो ।

न कोऽपि क्षुधा पीडितो मानवः स्यात्।

न रुग्णो न नग्नो न दीनश्च तस्मात्।।

न शिक्षा विहीनंच पश्याम कश्चित्।

प्रभो भारतस्योन्नतिः स्याद् कथंचित्।।3।।

शब्दार्थ :– कः अपि :– कोई भी क्षुधा पीडित :– भूख से दुःखी न :– न स्यात् :– हो रुग्णो :– रोगी, नग्नोः– वस्त्रहीन ,दीनश्च :– गरीब ,तस्मातः– इस लिए विहीनश्च :– बिना , पश्यामः– देखें ,कश्चित :– किसी को ,भारतस्य उन्नित :– भारत की उन्नति,कथंच्ति :– कैसे ,स्यात :– होगी ।

प्रसंग :– प्रस्तुत पंक्तियॉ संस्कृत भारती में से ली गई है। यह पाठ प्रार्थना में से ली गई है। इस में कवि ने कामना की है कि को भी भूखा रोगी वस्त्रहीन एवं दरिद्र न हो । सब शिक्षित हों।चिंता भी की गई है कि भारत की उन्नति कैसे हो गी।

सरलार्थ :– हे भगवान! भारत में कोई भी भूख से पीड़ित मानव न हो सब को रोटी हो।कोई रोगी न हो कोई वस्त्रहीन न हो अर्थात् सब के पास तन ढ़कने को वस्त्र हों ।कोई दीन– हीन गरीब न हो किसी को हम शिक्षा से विहीन न देखें ।हे प्रभू! हमारे भारत की उन्नति कैसे होगी ?

सुखैः पूर्णमेतद् भवेद् भारतं मे।

भवेदत्र नित्यं प्रभोऽनुग्रहस्ते।।

अयं कामना प्रार्थनैषा विधाता।

इमां पूरयैकां अये लोक माता।।4।।

शब्दार्थ :– पूर्णम एतद् :–पूरा यह ,भवेद :– हो ,मे :– मेरा ,भवेद अत्र :– हो यहॉ ,नित्यं :– रोज, अनुग्रहस्ते :– तुम्हारी कृपा ,अयं :– यह एषा :– यही ,विधाता :– भाग्य को बनाने वाले ,इतां :– इस को ही ,पूरय एकां :– इस एक को ही पूर्ण कीजिए ,अय :– यह ,लोक माता :–यह भारत,

प्रसंग :– ।प्रस्तुत पंक्तियॉ संस्कृत भारती में से लीं ंगई हैं। यह प्रार्थना पाठ में से ली गई ंहैं ।इस में भारत के सुखों से पूर्ण होने की कामना की गई है ।

सरलार्थ :– हे भगवान !तुमसे बार बार विनती है कि तुम्हारी कृपा से हर रोजे हमारा भारत सुखों से परिपूर्ण होता रहे यही हमारी कामना है और यही हमारी इच्छा है इसी कामना को लोकमाता पूरा करें।,

परीक्षितं यः कुरुते स शोभते

न शोभते कुरुतेऽपरीक्षितम्।

वनेऽत्र संस्थस्य समागता जरा

बिलस्य वाणी कदापि मे श्रुता।।5।।

शब्दार्थः–परीक्षितम :– अच्छी तरह जांच कर ,कुरुते :– किया जाता है,शोभते :– शोभा पाता है ,अपरीक्षितम :– बिना परीक्षि किये , संस्थस्य :– रहते हुए ,समागता :– आ गया जरा :– बुढापा मेश्रुता :– मैनें सुनी

प्रसंगः– प्रस्तुत लाईनें संस्कृत भारती में से ली गई हैं।यह दूसरे पाठ में से ली गई है। इस में कवि ने काम को परीक्षा करके करने करे कहा है।

सरलार्थ :–जो काम परीक्षा करके किया जाता है वह शोभा पाता है जो बिना परीक्षा के किया जाता है वह श्शेभा नहीं पाता ।वन में यहॉ रहते हुए मुझे बुढापा आ चला है परन्तु बिल की वाणी मेंरे द्वारा कदापि नहीं सुनी गई।

बुभुक्षितः किं न करोति पापं

क्षीणा नरा निष्करुणा भवन्ति।

आख्याहि भद्रे प्रिय दर्शनस्य

न गंगदतः पुनरेति कूपम्।।6।।

शब्दार्थः– बुभुक्षितः :– भूखा , किं नः– कौन सां नहीं, क्षीणा :–कमजोर ,नरा :–मनुष्य ,निष्करुणा :–दया रहित ,भवन्ति :– होते है ,आख्याहि :– कहता हूॅं, भद्रे :–अच्छे प्रियदर्शनस्य :– प्रियदर्शन से , पुनरेति :– दोबारा ,कूपम :–कूऍं में ।

प्रसंग :–प्रस्तुत पद्यांश संस्कृत भारती में से लिया गया है ,यह पाठ पंचम में से लिया गया है । इस में गंगदत की मूर्खता की वजह से सॉप द्वारा छले जाने पर दोबारा गंगदत के कुऍं में न आने के बारे में कहा गया है।

सरलार्थ :– गंगदत गोह से कहता है कि भूखा कौन सा पाप नहीं करता क्षीण हुआ मनुष्य करुणा रहित हो जाता है।इस लिए हे भद्रे ! प्रिय दर्शन से जा कर कह दो कि गंगदत फिर कूऍं में नहीं आएगा ।

सप्तम पाठ

नीति श्लोकाः

वरं पर्वत दुर्गेषु भ्रान्तं वनचरैः सह ।

न मूर्ख जन संर्पकः सुरेन्द्र –भवनेष्वपि।।7।।

शब्दार्थ :– वरम्:– अच्छा है ,पर्वत :– पहाडों की ,दुर्गेषु :– कंदराओं में, भ्रान्तम् :– घूमना ,वनचरैः :– जंगलियों के , सह :– साथ ,जन :– लोगों , संर्पकः :–के साथ ,सुरेन्द्र :– देवराज के ,भवनेष्वपि :– भवनों में भी ,

ह प्रसंग :–प्रस्तुत पद्यांश संस्कृत भारती में से लिया गया है,यह पाठ सप्तम् नीति श्लोकाः

में से लिया गया है इस में मूर्खों के साथ रहना वर्जित बताया गया है।

सरलार्थ :– पहाडों की कंदराओं में जंगली मनुष्यों के साथ घूमना अच्छा है और मूर्ख के साथ देवराज इन्द्र के साथ रहना भी अच्छा नहीं है।

सम्पत्सु महतां चितं भवत्युत्पलं– कोमलं।

आपत्सु च महाशैल –शिला –संघत– कर्कशम्।।8।

शब्दार्थ :– सम्पत्सु :– संम्पति आने पर , महतां चितं :– महान दिल वाले ,,उत्पलं :– कमल के समान ,आपत्सु :– विपति आने पर ,महाशैल :– विशाल पत्थर ,संघातं :–के समान कर्कशं :– कठोर ,

प्रसंग :–प्रस्तुत पद्यांश संस्कृत भारती में से लिया गया है,यह पाठ सप्तम् नीति श्लोकाः में से लिया गया है।इस में महान व्यक्तियों के स्वभाव के बारे में बताया गया है।

सरलार्थ :–महान व्यक्तियों का मन संम्पति आने पर कमल के समान कोमल हो जाता है और विपति आने पर विशाल पत्थर के समान कठोर हो जाता है

एकेनापि हि शूरेन पादाक्रान्तं महीतले।

क्रियते भास्करेणैव परिस्फुरित–तेजसा ।।9।।

शब्दार्थ :– एकेनापि :– एक ही ,शूरेन :– शूर वीर के द्वारा , महीतले :– सारी पृथ्वी , पादाक्रान्त :– पैरों से दबा ली जाती है क्रियते :– करता है ,भास्करेण इवः– सूर्य के समान , परिस्फुरित :–उज्जवल , तेजसा रोशनी से ।

प्रसंग :–प्रस्तुत पद्यांश संस्कृत भारती में से लिया गया है,यह पाठ सप्तम् नीति श्लोकाः में से लिया गया है इस में शूरवीर की प्रशंसा की गई हैं

सरलार्थ :– एक ही शूरवीर के द्वारा सारी पृथ्वी पैरों के नीचे दबा ली जाती है। एक ही सूर्य अपने तेज से सारी पृथ्वी को उज्जवल कर देता है।

आलस्यं हि मनुष्यानां शरीरस्थो महान रिपुः।

नास्ति उद्यम समो बन्धु यं कृत्वा नावसीदति ।।10।

शब्दार्थ :– आलस्य :– आलस हि :– ही शरीरस्थो :– शरीर में रहता हुआ ,महान रिपु :– सबसे बडा शत्रु है

न अस्ति :– नहीं है , यं :– जिसको , कृत्वा :– करके न अवसीदति :– शोक नहीं होता ।

प्रसंग :–प्रस्तुत पद्यांश संस्कृत भारती में से लिया गया है,यह पाठ सप्तम् नीति श्लोकाः में से लिया गया है ।इस में उद्यम का महत्व बताया गया है ।

सरलार्थ :– आलस्य ही मनुष्यों के शरीर में रहने वाला उनका सबसे बड़ा शत्रु है।उद्यम के समान कोई मित्र नहीं है जिसके कारण मनुष्य कभी शोक नहीं करता ।

मालती कुसुमस्येव द्वे गतीः मनस्विन

:मूर्ध्निवा सर्व लोकस्य शीर्यते वने एव वा ।।11।।

शब्दार्थ :–कुसुमस्रू :– फूल के समान , द्वे गति :– दो गतियॉ , मनस्विनः :–विद्वान की ,मूर्ध्नि वा :– या सिर पर ,सर्व लोकस्रू :– सब लोगों के , शीर्यते :– के सिर पर , एवः– ही , वा :–या ।

प्रसंग :–प्रस्तुत पद्यांश संस्कृत भारती में से लिया गया है, यह पाठ सप्तम् नीति श्लोकाः में से लिया गया है । इसमें विद्वान की प्रंशसा की गई हैं।

सरलार्थ :– विद्वान की मालती के फूल के समान दो ही गतियॉ होती हैं या तो वह सबसे आगे रहता है ,या फिर वन में ही सूख जाता है।

दुर्जन परिहर्तव्यः विद्याऽलंकृतोऽपि सन्।

मणिना भूषित सर्पः किमसौ न भयंकरः।।12।।

शब्दार्थः–दुर्जन :– दुष्ट व्यक्ति ; परिहर्तव्य :– छोड़ देना चाहिए ; अलंकृतो अपि :– विद्या से अलंकृत होने पर भी ;

मणिना :– मणियों से विभूषित होने पर भी ; किमसौ :– क्या ;

प्रसंग :– प्रस्तुत पंद्याश संस्कृत पुस्तक –8 में से ली गईं हैं । यह सुभाषितानि पाठ में से लीं गईं है।इसमें कवि ने दुष्ट को वर्जनीय बताया है

सरलार्थः–दुर्जन को छोड़ देना चाहिए चाहे वह विद्या से अंलकृत भी हो क्योंकि सॉप तो सॉप ही होता है चाहे वह मणियों से सजा हुआ ही क्यों न हो।

जयन्ति ते सुकृतिनो रससिद्धा कवीश्वराः।

नास्ति येषां यशः काये जरा मरणजं भयम।।13।।

शब्दार्थ :–जयन्ति :–अमर है। , सुकृतिनो :– सुन्दर रचनाएं लिखने वाले ,रससिद्धा :– अपने रसों [श्रृंगार वीर रोद्र विभीतस्य आदि] प्रवीण ,कवीश्वराः :– कवियों में अग्रगण्य ,येषां :– जिनके यशः काये :– यश रुपी शरीर को ,जरा :– बुढापा आदि ,मरण जं :–मरण आदि भयं :–डर नास्ति :– नहीं होता

प्रसंग :– यह लाईनें संस्कृत पुस्तक –8 में से ली गईं हैं । यह सुभाषितानि पाठ में से लीं गईं है।इसमें कवि ने कवियों के द्वारा रचनाओं के माध्यम से रचित हुए उनके महान यश के बारे में बताया है।

सरलार्थ :– कवि कहता है कि अपने अपने रस में सिद्ध महान कवि अमर हैं क्योंकि उनकी यश रुपी काया को मरण और बुढा़पा आदि अवस्थाओं का कोई डर नहीं रहता भाव वह अमर हो जाते हैं।

परोक्षे कार्य हन्तारं प्रत्यक्षे प्रियवादिने

वर्जयेत तादृश मित्रं विष कुम्भं पयो मुखम्।।14।।

शब्दार्थः– परोक्षे :–पीठ पीछे ;कार्यहन्तारंः– काम को बिगाड़ने वाला ; प्रत्यक्षे :– सामने ; प्रियवादिने :– मीठा बोलने वाला ; वर्जयेत :– छोड़ देना चाहिए; तादृश :–ऐसे मित्र को;विष कुम्भं :– जहर का घडा ;पयो :– दुध ; मुखं :– मुख पर;

प्रसंग :– यह लाईनें संस्कृत पुस्तक –8 में से ली गई है ।यह सुभाषितानि पाठ पंचदश में से ली गई है । इस में बुरे मित्र के अवगुण के बारे में बताया गया है।

सरलार्थ :– कवि कहता है कि जो व्यक्ति पीठ पीछे काम को बिगाडने वाला हो और सामने मीठा बोलने वाला हो ऐसे मित्र को छोड़ देना चाहिए क्योंकि वह ऐसे घडे के समान होता है जो विष से भरा हुआ है लेकिन दिखावे के तौर पर जिस के मुॅह पर दूध लगा हुआ है।

पृथ्व्यिां त्रीणि रत्नानि जलमन्नं सुाषितम्।

मूढैः पाषाणखण्डेषु रत्नसंज्ञा विधीयते ।।15।।

शब्दार्थ :– पृथिव्यॉ :– पृथ्वी पर , त्रीणि :– तीन , रत्नानि :– रत्न है जलम् :– पानी अन्नम् :– अन्न सुभरूितम् :– मीठा वचन ,मूढैः :– मूर्खों ने पाषण खण्डेषु ;:–पत्थरों के टुकडों को रत्न संज्ञा :– , रत्नों का नाम , विधीयते :– दिया है

प्रसंग :– प्रस्तुत पंक्तियॉ संस्कृत पुस्तक –8 में से ली गई है ।यह सुभाषितानि पाठ पंचदश में से ली गई है । इस में जल अन्न एवं मीठे वचन की महिमा गाई गई है।

सरलार्थ :– पृथ्वी पर तीन रत्न हैं जल अन्न और मीठा वचन मूर्खों ने पत्थर के टुकडों को रत्न की संज्ञा दी है ।

अयं निजः परोवेति गणना लघु चेतसां

उदारचरितां तु वसुधैव कुटुत्बकम।।16।।

शब्दार्थ :– अयं यह , निज :– अपना , पर वा इति :– यह परया है इस प्रकार , गणना :– गिनते है। ,लघु चेतसांः– छोटे दिल वाले उदार चरितानाम :– छोटे दिल वालों के लिए , तु :–तो वसुधा एव :– सारी पृथ्वी ही कुटुम्बकम :– परिवार है

प्रसंग :– प्रस्तुत पंक्तियॉ संस्कृत पुस्तक –8 में से ली गई है ।यह सुभाषितानि पाठ पंचदश में से ली गई है । इस में उदार व्यक्तियों का चरित्र बताया गया है।

सरलार्थ :– यह अपना है यह पराया है ऐसा छोटे दिल वाले सोचते है उदार चरित्र वाले लोंगों के लिए तो सारी पृथ्वी ही परिवार के समान है।

दशम् पाठः

चित्र श्लोकः

तातेन कथितं पुत्र ,लेखमेकम् लिखाधुना।

न तेन लिखितो लेखः ,पितुराज्ञा न लंघिता ।।17।।

शब्दार्थः– तातेम :– पिता ने ,कथितम् :– कहा ,लेखम एकम :– एक लेख ,लिख अधुना :– अभी लिखो , नतेन :–प्रणाम करके , पितु आज्ञा :– पिता की आज्ञा , न लंघिता :– का उलंघन नहीं किया ।

प्रसंग :– यह लाईनें संस्कृत पुस्तक –8 में से ली गई है ।यह चित्र श्लोका पाठ दश में से ली गई है । इस में शब्दों के जोड तोड से अर्थ में परिवर्तन दर्शया गया है

सरलार्थ :–पिता ने पुत्र से कहा अभी एक लेख लिखो । पुत्र ने सिर झुका कर लेख लिखा इस प्रकार पिता की आज्ञा का उल्लंघन नहीं किया ।

विशेषताः– दूसरी लाईन के नतेन शब्द को अगर जोड कर पढ़ा जाए तो यह अर्थ बनता है । अगर तोड कर पढ़ा जाय तो न तेन शब्द बनता है दस का अर्थ हुआ न तो उसने लेख लिखा न पिता की आज्ञा का उल्लंधन किया ।

कं संजधान श्रीकृष्णः? का शीतल वाहिनी गंगा ?

के दार पोषण–रता? कं बलवन्तं न बाधते शीतम् ?18।।

शब्दार्थ :– कंः– किसने , संजघान :– मारा का :– कहॉ है , शीतल वाहिनी :– शान्त रूप से बहने वाली ,के :– कौन दार भार्या के , पोषण रता :– पालन पोषण में लगे हुए

प्रसंग :– प्रस्तुत पंक्तियॉ संस्कृत पुस्तक –8 में से ली गई है ।यह चित्र श्लोका पाठ दश में से ली गई है । इस में चार पाद है प्रत्येक पाद में एक प्रश्न है ,उसका उतर प्रत्येक पाद के पहले दो शब्द मिलाने से मिल जाता है ।

सरलार्थ :– कृष्ण ने किस को मारा ? कंस को। , शान्त रुप से बहने वाली गंगा कहॉ है? ,काशी में ।कौन अपनी भार्या के पोषण में लगे हुए हैं ? केदारनाथ । किस बलशाली कों ठंड नही लगती ? कंबल वाले को ।

सीमान्तिनीषु का शान्ता ? राजाऽभूतम् को गुणोतम् ?

विद्वद्भिः का सदा वंद्या ?अत्रैवोक्तं न बुध्यते ।।19।।

शब्दार्थ :–सीमान्तिनीषु :– स्त्रियों में ,का :– कौन ,शान्ता :– सबसे शान्ता है अभूत :–हो कर कः :– कौन ,गुणो उतमम् :– गुणवानों में श्रेष्ठ ,, विद्वद्भि :' विद्वानों में काः–कौन वंद्या :– वन्दनीय। अत्र एव उक्तं :– यहॉ यह कहा गया है ,न बुध्यते :– ज्ञान नहीं करवाया गया ।

प्रसंग :– प्रस्तुत पंक्तियॉ संस्कृत पुस्तक –8 में से ली गई है ।यह चित्र श्लोका पाठ दश में से ली गई है । इस में चार पाद है प्रत्येक पाद में एक प्रश्न है ,उसका उतर प्रत्येक पाद के पहले एवं अखिरी शब्द मिलाने से मिल जाता है ।

सरलार्थः– स्त्रियों में कौन सबसे शान्त है, सीता ।राजा हो कर कौन गुणों में उतम् है , राम ।विद्वानों में कौन पूजनीय है विद्या , ।:– यहॉ यह कहा गया है ज्ञान नहीं करवाया गया ।

कस्तूरी जायते कस्मात् ? को हन्ति करिणां कूलम्।

युधि किं कुरुते भीरुः ? मृगात् सिंह पलायते ।।20।।

शब्दार्थः–कस्तूरी :– मृग से निकलने वाली गंध विशेष ,जायते :– पैदा होती , कस्मात :– किस से ,हन्ति :– मारता है ,करिणां :– हाथियों के कुलम् :– समूह या वंश को ,युधि :– युद्ध में , किम् :– क्या भीरु :– डरपोक ,

प्रसंग :– यह लाईनें संस्कृत पुस्तक –8 में से ली गई है ।यह चित्र श्लोका पाठ दश में से ली गई है । इस में चार पाद है प्रत्येक पाद में एक प्रश्न है ,उसका उतर अंतिम पाद में मिल जाता है ।

सरलार्थ :– कस्तूरी किससे पैदा होती है ,हिरणा से ।हाथियों के वंश को कौन मारता है सिंह ।युद्धि में कायर क्या करते हैं ।पलायन।

अस्ति यद्यपि सर्वत्र नीरं नीरज राजितम्।

रमते न मरालंस्य मानसं मानसं बिना।।21।।

शब्दार्थ :– अस्ति :– है ,यद्यपि :– भले ही ,सर्वत्र :– सब और नीरं :– जल नीरज राजितम् :–कमलों से भरा हुआ , रमते नः–रमते नहीं , मरालस्यः– हंस का , मानसं :– मन मानसं :–मानसरोवर ,

प्रसंग :– प्रस्तुत पंक्तियॉ संस्कृत पुस्तक –8 में से ली गई है ।यह पाठ त्रयोदश सुभाषितानि में से ली गई है । इस में उतम व्यक्ति के स्वभाव के बारे में बताया गया है ।

सरलार्थ :–यद्यपि सब जगह साफ पानी से भरे तालाब कमलों से भरे हुए है फिर भी हंस का मन मानसरोवर के अतिरिक्त कहीं नहीं लगता ।

न त्वहं कामये राज्यम् न स्वर्गं नापुनर्भवम्।

कामये दुःख तप्तानां प्राणिनां आर्तिनाशनम् ।।22।

शब्दार्थः– त्वंहं :–तुम से ,कामये :– कामना करता हूॅ न पुर्न भवम :– न फिर से पैदा होने की ,कामये :–कामना करना तप्तानां :– तपते हुए आर्तिनाशनं :– दुःख को दूर करने की

प्रसंग :– प्रस्तुत पंक्तियॉ संस्कृत पुस्तक –8 में से ली गई है ।यह पाठ त्रयोदश सुभाषितानि **में** से ली गई है । इस में लोगों के दुःख हरने की कामना की गई है

सरलार्थ :– कवि कहता है कि न मैं तुम से राज्य चाहता हूॅ । न स्वर्ग चाहता हूॅ न फिर से जन्म चाहता हूॅ मैं दुःख से तपते हुए प्राणियों के दुःख का नाश कर सकूं ऐसा होना चाहता हूॅ।

सर्वे भवन्तु सुखिनः ,सर्वे सन्तु निरामया।

सर्वे भद्राणि पश्यन्तु ,मा कश्चिद् दुःख भाग्य भवेद ।।23।।

शब्दार्थ :–सर्वे :– सब भवन्तु :– हों सुखिन :–' सुखी हो सन्तु :– हों निरामया :– निरोग ,भद्राणि :– सब का भला पश्यन्तु :– देखते हुए ।ता :– न हो कश्चिद् :– किसी के भवेद :– हो

प्रसंग :– प्रस्तुत पंक्तियॉ संस्कृत पुस्तक –8 में से ली गई है ।यह पाठ त्रयोदश सुभाषितानि **में** से ली गई है । इस में लोगों के दुःख हरने की कामना की गई है

सरलार्थः– सब सुखी हों सब रोग रहित हों सब का भला देखें और किसी के भी भाग्य में दुःख न हो ।

अपूर्वः कोऽपि कोशोऽयं विद्यते तव भारती ।

व्ययतो वृद्धिमायाति ,क्षयमायाति संचयात् ।।24।।

शब्दार्थः– अपूर्व :– अनोखा, कः अपि :– कोई भी , कोश :– खजाना ,अयं :– यह विद्यते है तव :– तुम्हारा वययतो :– खर्च करने पर , वृद्धिम :– बढता है क्षयम् आयाति :– नष्ट होता है संचयात :– इक्टठा करने पर

प्रसंग :– प्रस्तुत पंक्तियॉ संस्कृत पुस्तक –8 में से ली गई है ।यह पाठ त्रयोदश सुभाषितानि **में** से ली गई है । इस में विद्या की अनोखी विशेषता के बारे में बताया गया है ।

सरलार्थः–हे देव वाणी भारती ! तुम्हारा खजाना बडा अनोखा है यह खर्च करने पर बढता ही जाता है और इकट्ठा करने पर घटता ही जाता है ।

दिवा पश्यति नोलूकः ,काको नक्तं न पश्यति ।

विद्या विहीनः मूढस्तु ,दिवा नक्तं न पश्यति ।।25।।

शब्दार्थः– दिवा :– दिन में पश्यति :– देखता न उलूकः :– उल्लू काक :– कौआ नक्तं :– रात को पश्यति :– देखता मूढः तु :– और मूर्ख

प्रसंग :– प्रस्तुत पंक्तियॉ संस्कृत पुस्तक –8 में से ली गई है ।यह पाठ त्रयोदश सुभाषितानि **में** से ली गई है । इस में प्राणि विशेष की देखने की विशेषता के बारे में बताया गया है।

सरलार्थः– कवि कहता है कि उल्लू दिन में नही देख सकता ,और कौआ रात को नहीं देख सकता ।विद्या से विहीन न दिन में देख सकता है न रात कों ।

परस्परं विवादे हि वयं पंच ,शतं च ते ।

अन्यै सह विवादे तु वयम् पंचोतरं शतम्।।26।।

शब्दार्थ :– परस्परं :– आपस में विवाद :– झगड़ा होने पर वयमः– हम अन्यै :– दूसरों के सह :–साथ पंचोतर :– एकसौ पा

प्रसंग :–प्रस्तुत पद्यांश संस्कृत पुस्तक –8 में से लिया गया है ।यह पाठ त्रयोदश सुभाषितानि **में** से लिया गया है । इस में कवि ने कहा है कि पाण्डव कहते है कि आपस में झगड़ा होने पर हम पाचॅ है और वह सौ हैं परन्तु दूसरों के साथ झगड़ा होने पर हम एक सो पॉच हैं ।

सरलार्थ :– इस में कवि ने कहा है कि पाण्डव कहते है कि आपस में झगड़ा होने पर हम पाचॅ है और वह सौ हैं परन्तु दूसरों के साथ झगड़ा होने पर हम एक सौ पॉच हैं ।

सुखार्थी चेत त्यजेत् विद्या , विद्यार्थी च त्यजेत् सुखम्।

सुखार्थिन कुतो विद्या ,कुतो विद्यार्थिनः सुखम् ।।27।।

शब्दार्थः– त्यजेत् :– छोड सुखार्थिन :–सुख चाहने वालें को , कुतो कहॉ

प्रसंग :– प्रस्तुत पद्यांश संस्कृत पुस्तक –8 में से लिया गया है ।यह पाठ त्रयोदश सुभाषितानि **में** से लिया गया है । इस में कवि ने कहा है कि विद्यार्थी को बहुत मेहनत करनी चाहिए सुखी रहने से विद्या नहीं मिलती।

सरलार्थ :– कवि कहता है कि अगर सुख चाहिए तो विद्या छोड दें अगर विद्या चाहिए तो सुख छोड दें क्योंकि सुख चाहने वाले को विद्या कहॉ और विद्या चाहने वाले को सुख कहॉ

जल बिन्दु निपातेन , कमशः पूर्यते घट :

सः हेतु : सर्व विद्यानां धर्मस्य धनस्य च।।28।।

शब्दार्थ :–निपातेन :– गिरने से ,कमश :–धीरे धीरे हेतु :– कारण

प्रसंग :– प्रस्तुत पंक्तियॉ संस्कृत पुस्तक –8 में से ली गई है ।यह पाठ त्रयोदश सुभाषितानि **में** से ली गई है । इस में कवि ने कहा है कि थोड़ा थोड़ा जोडने से धर्म विद्या एवम् धन बहुत जुड़ जाता है ।

सरलार्थ :—पानी धीरे धीरे पड़ने से क्रमशः घडा भर जाता है ऐसा ही सब विद्याओं के बारे में एवं धर्म के बारे में धन के बारे में समझना चाहिए ।

श्वः कार्यम्द्य कुर्वीत पूर्वाह्णे चापराह्णिकम्।

नहि प्रतीक्षते मृत्यु कृतमस्य न वा कृतम् ।।29।।

शब्दार्थः— श्वः— कल करने वाले कार्यम् :— कार्य को अद्य :— आज पूर्वाहणे :— पूर्व भाग में च :— और अपराह्णिकम् :— दिन के उतर भाग में प्रतिक्षतेः— मृत्यु ,कृतमस्य :— किया है वा :— या कृतम् :—किया

प्रसंग :— प्रस्तुत पंक्तियॉ संस्कृत पुस्तक —8 में से ली गई है ।यह पाठ त्रयोदश सुभाषितानि **में** से ली गई है । इस में कवि ने कहा है कि आज का काम कल पर न छोडें ।

सरलार्थः— कल करने वाले कार्य को आज ही करलें आज दिन के पहले पहर में कर लें । मृत्यु कभी प्रतीक्षा नहीं करती कार्य किया है या नहीं किया ।

सत्काव्य — भूषणा वाणी ,रजनी चन्द्र— भूषणा ।

सुशील— भूषणाा नारी ,लक्ष्मीः विनय भूषणा ।।30।।

शब्दार्थः—सत्काव्य :— सच्ची रचना से भूषणा :— विभूषित रजनी :— रात सुशील :— शलीनता से विनय :— विनम्रता से ।

प्रसंग :— प्रस्तुत पंक्तियॉ संस्कृत पुस्तक —8 में से ली गई है ।यह पाठ त्रयोदश सुभाषितानि **में** से ली गई है । इस में कवि ने कहा है कि सच्ची रचना से वाणी, ,चन्द्र से रात्रि शोभा पाती है शालीनता से नारी शोभा पाती है और विनम्रता से लक्ष्मी शोभा पाती है।

सरलार्थ :—इस में कवि ने बताया है कि शलीनता से नारी शोभा पाती है ,चन्द्र से रात्रि शोभा पाती है शालीनता से नारी शोभा पाती है और विनम्रता से लक्ष्मी शोभा पाती है ।

पिबन्ति नद्यः स्वयमेव नाम्भः,।

स्वयं न खादन्ति फलानि वृक्षा :।।

धराधरो वर्षति नात्म हेताः।

परोपकराय सतां विभूतयः।।31।

शब्दार्थ :—नद्यः :—नदियॉ, अम्भः :—जल, विभातिः— चमकती काय :—काया

प्रसंग :— प्रस्तुत पंक्तियॉ संस्कृत पुस्तक —8 में से ली गई है ।यह पाठ त्रयोदश सुभाषितानि **में** से ली गई है । इस में कवि ने बताया है कि परोपकार ही जीवन है ।

सरलार्थ :— नदियॉ अपना जल स्वयं नहीं पीतीं वृक्ष अपने फल स्वयं नहीं खाते मेघ अपने लिए नहीं बरसता सज्जनों की संपतियॉ परोपकार के लिए होती है।

श्रोत्रं श्रुतेनैव न कुण्डलेन,

दानेन पाणिः न तु कंकणेन

विभति कायः खलु सज्जनानां।

परोपकारैः न तु चन्दनेन ।।32।।

शब्दार्थ :—श्रोत्रं :— शास्त्र श्रुतेन एव :— सुनना ही पाणिः— हाथ कंकणेन :— कंगन की विभाति :— चमकती परोपकारैः :— परोपकार से ।

प्रसंग :— प्रस्तुत पंक्तियाँ संस्कृत पुस्तक —8 में से ली गई है ।यह पाठ त्रयोदश सुभाषितानि **में** से ली गई है । इस में कवि ने बताया है कि परोपकार ही जीवन है ।

सरलार्थ :— कान शास्त्र सुनने से शोभा पातें है न कि कुण्डलों से, हाथ दान देने शोभा पाते हैं कंगन पहनने से नहीं ,सज्जनों का शरीर परोपकार से शोभा पाता है चंदन लगाने से नहीं ।

षोडश पाठ

हितोपदेश

काव्य शास्त्र विनोदंन कालो गच्छति धीमताम् ।

व्यसनेन च मूखाना ंनिद्रया कलहेन वा ।।1।।

शब्दार्थ :—विनोदेन :— हंसते खेलते हुए धीमताम् :— बुद्धिमानों का व्यसनेन :— नशा करने वालों का ंनिद्रया :— सोने में कलहेन वा :— या झगडा करने में

प्रसंग :— प्रस्तुत पंक्तियाँ संस्कृत पुस्तक —8 में से पाठ षोडश हितोपदेश **में** से ली गई है । इस में कवि ने बताया है कि बुद्धिमानों का समय कैसे बीतता है ।

सरलार्थ :— बुद्धिमानों का समय काव्य शास्त्रों के साथ हंसते खेलते बीतता है जब कि मूर्खों का समय नशा करने सोने में या झगड़ा करने में बीतता है ।

विद्या ददाति विनयं ,विनयाद् याति पात्रता ।

पात्रत्वाद् धनम् आप्नोति, धनाद् धर्मः ततः सुखम् ।।2।।

शब्दार्थ :—ददाति :— देती है विनयाद :— विनम्रता से ,याति आती है पात्रता :—योग्यता , पात्रत्वाद पात्रता से , आप्नोतिः—आता है , : ततः ता

` प्रसंग :– प्रस्तुत पंक्तियॉं संस्कृत पुस्तक –8 में से ली गई है ।यह पाठ षोडश हितोपदेश **में** से ली गई है । इस में कवि ने बताया है कि विद्या पढने का सार्थक प्रभाव क्या होता है ।

सरलार्थ :–विद्या विनम्रता देती है ,विनम्रता से पात्रता मिलती है, पात्रता से धन मिलता है ,धन से धर्म होता है और धर्म से सुख होता है ।

स जातो येन जातेन याति वंशः समुन्नतिम्।

परिवर्तिन संसारे मृतः को वा न जायते ।।3।।

शब्दार्थ :–जातो :––जीता है येन :– जिस के जीने से ,जातेन :– जीने से याति :– प्राप्त करता है समुन्नतिं :– तरक्की को परिवर्तिन :–परिवर्तनशील मृत :– मरता जायते :– जीता ।

` प्रसंग :– प्रस्तुत पंक्तियॉं संस्कृत पुस्तक –8 में से ली गई है । यह पाठ षोडश हितोपदेश **में** से ली गई है । इस में कवि ने बताया है कि वंश की उन्नति करने वाले का ही जीना ही सार्थक है ।

सरलार्थः– वह ही जीता है जिसके जीने से उसका वंश उन्नति को प्राप्त होता है वरना इस परिवर्तन शील संसार में कौन नहीं जीता और कौन नहीं मरता ।

वरमेको गुणी पुत्रो न च मूर्खशतानि अपि ।

एक चन्द्रः तमो हन्ति न च तारागणो अपि ।।4।।

शब्दार्थः– वरम एको :– एक ही बहुत है मूर्ख शतानि :– सौ मूर्ख अपि :– भी तमो :– अंधकार को हन्ति :– हर लेता गणोः– समूह`

प्रसंग :– प्रस्तुत पंक्तियॉं संस्कृत पुस्तक –8 में से ली गई है । यह पाठ षोडश हितोपदेश **में** से ली गई है । इस में कवि ने बताया है कि वंश की उन्नति करने वाला एक ही पुत्र बहुत है।

सरलार्थः–एक ही गुणी पुत्र बहुत है सौ मूर्ख पुत्रों से क्या लाभ ? एक ही चन्द्रमा अंधकार को दूर करने के लिए बहुत है लाखों तारों के समूहों से क्या लाभ ।

कीटोऽपि सुमन संगाद् आरोहति सतां शिरः।

अश्मापि याति देवत्वं महद्भिः सुप्रतिष्ठितं ।। 5।।

शब्दार्थ :–कीटः अपि :– कीड़ा भी ,सूमन :– फूल के संगाद :– संग से ,आरोहति :–चढ जाता है सतां :– सज्जनों के शिरः– सिर पर अश्मा अपि :– पत्थर भी याति :– प्राप्त होता ,देवत्वं :– प्रभुत्व को महद्भि :– महान व्यक्तियों के द्वारा, सुप्रतिष्ठितं :– अच्छी प्रकार ।

प्रसंग :– प्रस्तुत पंक्तियॉं संस्कृत पुस्तक –8 में से ली गई है । यह पाठ षोडश हितोपदेश **में** से ली गई है । इस में कवि ने कहा है कि उच्चकोटी के मनुष्य का संग पाने से निम्नकोटी का मनुष्य भी उच्चकोटी का हो जाता है।

सरलार्थ :– कीडा भी फूल का संग ताने से सज्जनों के सिर पर चढ जाता है ,महान व्यक्ति के द्वारा अच्छी प्रकार से प्रतिष्ठित करने पर पत्थर भी देवत्व को प्राप्त हो जाता है

आपत्काले तु संप्राते यन्मित्रं मित्रमेव तत्।

वृद्धिकाले तु सम्प्राते दुर्जनोऽपि सुहृद् भवेत्।।6।।

शब्दार्थ :– आपत्काले :– विपति ,संप्राते आने पर ,तु :– तो यन :– जो मित्रं :– मित्र ह मित्रम एव :–मित्र ही तत :– वही वृद्धिकाले :– अच्छे समय में दुर्जन अपि :– बुरे लोग भी सुहृद :– साथी भवेत :– हो जाते हैं ।

प्रसंग :– :– प्रस्तुत पंक्तियॉं संस्कृत पुस्तक –8 में से ली गई है । यह पाठ षोडश हितोपदेश **में** से ली गई है । इस में कवि ने कहा है कि उच्चकोटि के मनुष्य की परिभाषा दी है।

सरलार्थ :– विपति आने पर जो मित्र है असल में वही मित्र है अच्छा समय आने पर तो दुश्मन भी सुहृदय हो जातें है

मातृवत् परदारेषु परद्रव्येषु लोष्ठवत ।

आत्मवत् सर्वभूतेषु यः पश्यति सः पंडितः ।।7।।

शब्दार्थ :–मातृवत :– माता के समान , परदारेषु :– दूसरे की स्त्रि को ,परद्रवेषु :– दूसरे के धन को ,लोष्ठवत :– मिट्टी के ढेले के समान ,आत्मवत :– अपने समान सर्वभूतेषु :– सब प्राणियों को यः :– जो पश्यति :– देखता है सः :– वह पंडित :–विद्वान

प्रसंग :– प्रस्तुत पंक्तियॉं संस्कृत पुस्तक –8 में से ली गई है । यह पाठ षोडश हितोपदेश **में** से ली गई है । इस में कवि ने कहा है कि उच्चकोटी के मनुष्य समय के साथ दल नहीं बदलते ।

सरलार्थ :– जो व्यक्ति दूसरे की स्त्री को माता के समान ,दूसरे के धन को मिट्टी के ढेले के समान ,एवं सब प्राणियों को अपने समान समझता है वही पंडित है ।

षड दोषाः पुरुषेणेह हातव्या भूतिम् इच्छता ।

निद्रा तन्द्रा भयं क्रोधं आलस्यं दीर्घसूत्रता ।।8।।

शब्दार्थ :– षड :– छः ,दोषाः :– दोष , पुरुषेण :–पुरूष के द्वारा भूतिंम् :– एश्वर्य ,इच्छता :– चाहने वाले ,हातव्य :– छोड देना , निद्रा :– नींद तन्द्रा :– उंघते रहना ,दीर्घसूत्रता :– देर तक उंधते रहना ।

प्रसंग :– प्रस्तुत पंक्तियॉं संस्कृत पुस्तक –8 में से ली गई है । यह पाठ षोडश हितोपदेश **में** से ली गई है । इस में कवि ने कहा है कि एश्वर्य चाहने वाले मनुष्य को छः दोष छोड देने चाहिए ।ज्यादा नींद लेना, उंघते रहना भय करना , क्रोध करना , आलस्य करना ।क्योंकि यह सब मनुष्य के कार्यों को बिगाडने वाले हैं ।

सरलार्थ :– एश्वर्य चाहने वाले मनुष्य को छः दोष छोड देने चाहिए ।ज्यादा नींद लेना, उंघते रहना भय करना , क्रोध करना , आलस्य करना और जल्दी हो जाने वाले कार्यों को देर में करना क्योंकि यह सब मनुष्य के कायों को बिगाडने वाले हैं।

अल्पानामपि वस्तूनां संहतिः कार्यसाधिका ।

तृणैः गुणत्वं आपन्नै बध्यन्ते मतदन्तिनः ।।9।।

शब्दार्थ :–अल्पानाम अपि :– छोटी वस्तुएॅ संहतिः– इक्टठा करने पर, कार्यसाधिका :– बडे काम सिद्ध करती है तृणै :– तिनकों को गुणत्वं :– ठीक प्रकार आपन्नै : :– बांधने पर , बंध्यन्ते :– बांध लिया जाता है ,मतदन्तिनः– मद मस्त हाथी

प्रसंग :– प्रस्तुत पंक्तियॉं संस्कृत पुस्तक –8 में से ली गई है । यह पाठ षोडश हितोपदेश **में** से ली गई है । इस में कवि ने छोटी छोटी चीजों के महत्व के बारे में बताया गया है ।

सरलार्थ :– छोटी छोटी वस्तुओं को इकटठा करने पर बडे बडे काम किए जा सकते हैं तिनकों को ठीक प्रकार गून्थ कर रस्सी तैयार करने से बडे मस्त हाथी को बांधा जा सकता है ।

दानं भोगो नाशः तिस्रः गतयो भवन्ति वितस्य ।

यो न ददाति न भुंक्ते तस्य तृतीया गर्तिभवति ।।10।।

शब्दार्थ :– तिस्र :– तीन गतयो :– गतियॉ ददाति :– देता है भुक्ते :– उपभोग करता है तस्य :– उसकी तृतीया :–तीसरी गति :– गति भवति :– होती है

प्रसंग :– प्रस्तुत पंक्तियॉं संस्कृत पुस्तक –8 में से ली गई है । यह पाठ षोडश हितोपदेश **में** से ली गई है । इस में धन की तीन गतियों के बारे में बताया गया है कि धन का उपभोग सुख सुविधाओं के लिए करना चाहिए । और बच्चे हुए धन से किसी की मदद करनी चाहिए।

सरलार्थः– दान देना उपभोग करना एवं नाश होना यह धन की तीन गतियॉ होती है। जो न दान देता है न उपभोग करता है उसके धन की तीसरी गति होती है।

तुला लाहेन घटिता यत्र खदन्ति मूषिका।

श्री मान्तत्र हरेच्छ्येनो बालकं नात्र संशयं।। 11।।

शब्दार्थः– तुला :– तकडी लोहेन :– लोहे की घटिता :– बनी यत्र :– जहॉ मूषिका :– चूहे तत्रः– वहॉ श्येन :– बाज हरे :– चुरा लेता न अत्र :– यहॉ संशय :– शंका

प्रसंग :– प्रस्तुत पंक्तियॉं संस्कृत पुस्तक –8 में से ली गई है । यह पाठ अष्टादश पाठ तुला लोहेन धटितां यत्र खादन्ति मूषिका **में** से ली गई है । इस में जैसे को तैसा सबक सिखाया गया है ।

सरलार्थः—लोहे से बनी तराजु को जहॉ चूहे खा जाते है वहॉ बाज भी बच्चे को हर कर ले जा सकता है इसमें कोई संदेह नहीं है

पाठ नवदश :

सुप्रभातं

उदयति मिहिरो विदलित तिमिरो

भुवनं कथमभिरामम्।

प्रचरति चतुरो मधुकर निकरो

गुंजति कथमविरामम्।।12।।

शब्दार्थ :—मिहिरो :— सूर्य विदलित :— दूर करने वाला तिमिरो :— अंधकार ,कथम :— किस प्रकार अभिरामम् :— सुन्दर

प्रचरति :— घूम रहे है मधुकर :— भंवरे निकरो :— समूह कथम् :— किस प्रकार अविरामम :— बिना रुके

प्रसंग :— प्रस्तुत पंक्तियॉ संस्कृत पुस्तक —8 में से ली गई है । यह पाठ नवदश सुप्रभातं **में** से ली गई है । इस मे ंसुबह का वर्णन किया गया है ।

सरलार्थ :—अंधकार का दमन करके सूर्य उदय हो रहा है तीनों लोक किस प्रकार सुन्दर हो गये हैं ।चतुर भॅवरों का समूह किस प्रकार बिना रुके चारों दिशाओं में गूज रहा है ।

विकसति कमलं विलसति सलिलं

पवनो वहति सलीलम्।

दिशि दिशि धावति कूजति नृत्यति

खग कुलमतिशय लोलम्।।13।।

शब्दार्थ :—विकसित :— खिला हुआ , विलसति :—सुशोभित होना ,सलीलम :—धीरे धीरे ,दिशि दिशि :— दिशाओं में ,धावति :— दौडता ,नृत्यति :— नाच करता ,खग कुलम् :—

पक्षियों का समूह ,अतिशय :— बहुत अधिक ,लोलम :— चंचल

प्रसंग :– प्रस्तुत पंक्तियाँ संस्कृत पुस्तक –8 में से ली गई है । यह पाठ नवदश सुप्रभातं **में** से ली गई है । इस मे ंसुबह का वर्णन किया गया है ।

सरलार्थ :– कवि कहता हैकि कमल खिल गए है पानी सुशोभित हो रहा है वायु मन्द मन्द बह रहा है ।चंचल भवरों का समूह दिशाओं दिशाओं मे घूम रहा है । नाच रहा है ।

शिरसि तरुणां रवि किरणानां

खेलति रुचिररुणाभा ।

उपरि दलानां हिम –कणिकानां

काऽपि हृदयहर –शोभा ।।14 ।।

प्रसंग :– प्रस्तुत पंक्तियाँ संस्कृत पुस्तक –8 में से ली गई है । यह पाठ नवदश सुप्रभातं **में** से ली गई है । इस मे ंसुबह का वर्णन किया गया है ।

शब्दार्थ :–तरुणानाम :– वृक्षों के शिरसि :– उपरी रुचि :– सुन्दर अरुणाभा :– लाल कान्ति उपरि :– उन के उपर दलानाम :– कमल के पतों पर हिम कणिकानाम :– ओस की बूंदे हृदयहर :– मन को खींच लेने वाली ।

सरलार्थ :– वृक्षों के उपरी पतों पर सूर्य की लाल कान्ति खेल रही है ।कमल के पतों पर ओस की बूंदों की कितनी मनोहर शोभा हो रही है।

प्रसरति गगने हरि हर –भवने

दुन्दुभि –दम दम नादः।

भज परमेशं पठ सनिवेशं

भवतादनुपम –मोदः।।15।।

शब्दार्थ :– प्रसरति :– फैल रहा है गगने :– आसमान में हरि हर –शिव एवं विष्णु नाद आवाज भज :– भजन करो सनिवेशम :– ध्यान पूर्वक भवताद :– आप दोनो की अनूपम :– अनोखी

प्रसंग :– प्रस्तुत पंक्तियाँ संस्कृत पुस्तक –8 में से ली गई है । यह पाठ नवदश सुप्रभातं **में** से ली गई है । इस मे ंसुबह का वर्णन किया गया है ।

सरलार्थ :–शिव एवम विष्णु के भवनों से दुंदुमभि का दम दम नाद फैल रहा है । मानो इस प्रकार कह रहा हो भगवान का भजन करो और पाठों को ध्यान से पढ़ो ।